B.A. (Part - III)

Paper - VI

Silk Industry in Japan

जापान के ग्रामीण परिवारों में रेशम का उत्पादन अति प्राचीन काल से हो रहा था। मलबरी के वृक्षों पर रेशम के कीड़ों को पालने का कार्य किसान परिवारों का प्रमुख धन्धा था।

1914 से 1929 के मध्य रेशम का उत्पादन तिगुना बढ़ गया। प्रथम महायुद्ध काल तथा उसके बाद के वर्षों में वस्त्र उत्पादन के क्षेत्र में भारी तकनीकी हेर-फेर शुरू किये गए। जापान फैशनेबल कपड़ों के लिए अधिक लोकप्रिय हो गया। किसान रेशम के कीड़े पालने लगें। 1929 तक आधी किसान सहायक धन्धे के रूप में यह कार्य करने लगें। इसमें लड़कियों की संख्या बहुत थी। इससे किसानों के परिवार की आय बढ़ी, जीवन स्तर में सुधार हो गया। 1930 में मन्दी के कारण जापान को कष्ट एवं संकट का सामना करना पड़ा। जापान सरकार ने इस व्यापार के विकास के लिए अनेक सुविधायें दी। कीड़ों के पालन-पोषण में शहतूत की खेती प्रारम्भ की। अनेक विधियों के सुधार के कारण उत्पादन थोड़ा बढ़ गया। रेशम बुनने के कार्य करने वालों को दो भागों में बाँटा गया :-

1. वे संचालित करते जो घरों में, छोटी-छोटी दुकानों में घरेलू बाजार के लिए कम आज का वस्त्र तैयार करते थे।

Scanned with CamScanner

2. बड़े बड़े कारखानों में बड़े आर्डर के कपड़े मशीनों द्वारा निर्मित करने के लिए उत्पादन करते थे।

द्वितीय विश्व युद्ध एवं बाद का समय:
द्वितीय युद्ध के बाद जापान से रेशम का निर्यात बहुत कम होने लगा जबकि युद्ध से पूर्व यह व्यापार में महत्वपूर्ण स्थान रखता था। द्वितीय युद्ध के समय खाद्यान्न की कमी के कारण जहाँ शहतूत के कीड़े पाले जाते थे उन्हें खेतों में परिवर्तित कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त अमेरिका ही रेशम का आयात करता था।